ॐ

श्रीराम जन्मभूमि

सन्त उच्चाधिकार समिति द्वारा श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण के सम्बन्ध में प्रस्तुत विचार

श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मन्दिर निर्माण के लिए हिन्दु समाज आतुर है। प्रतीक्षा करते-करते १७ वर्ष बीत गए और मुकदमा चलते तो ६० वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। मुकदमा कितना लम्बा और चलेगा यह कहा नहीं जा सकता। वार्तालाप आज तक निरर्थक सिद्ध हुआ है। अब केवल एक ही मार्ग बचा है कि संसद में कानून बनाकर भारत सरकार श्रीराम जन्मभूमि सम्मानपूर्वक हिन्दू समाज को सौंप दे। सन्त समाज का विचार है कि-

०१. सन्तों के नेतृत्व में चलने वाला श्रीरामजन्मभूमि मंदिर निर्माण का यह सात्विक आंदोलन करोड़ो हिन्दुओं की आस्था का विषय है, हमारा आग्रह है कि इसे कोई भी वोट का विषय न बनावें।

०२. सन्त समाज समस्त राजनीतिक दलों से यह भी आग्रह करता है कि यह विषय राष्ट्रीय महत्व का होने के कारण इस पर सभी राजनीतिक दल राजनीति से ऊपर उठकर इसका समर्थन करें तथा एकमत से संसद में कानून बनाकर श्रीराम जन्मभूमि हिन्दू समाज को सौप दें।

०३. श्रीराम जन्मभूमि भगवान का प्राकट्य स्थल है इस पर मन्दिर निर्माण के लिये संसद में कानून बनने से ही हिन्दुओं के ऊपर सतत होने वाले अपमान का परिमार्जन होगा। यही अपमान हिन्दू समाज को, भगवान का प्राकट्य स्थल होने से, मथुरा और काशी में भी सताता है।

०४. शास्त्र, परम्परा और सन्त समाज का स्पष्ट मत है कि वह स्थल ही श्रीराम जन्मभूमि है जहाँ श्री रामलला आज भी विराजमान हैं और उनकी निरंतर पूजा हो रही है। इसी स्थान पर भव्य मंदिर का निर्माण होगा।

०५. श्रीराम जन्मभूमि हिन्दू समाज के लिये सम्पत्ति नहीं है, अपितु रामलला के समान ही जन्मभूमि भी देवता है और इस रुप में पूज्य है तथा इसी स्थान के लिए लाखों भक्तों ने बलिदान दिया है।

०६. मन्दिर के जिस प्रारुप के लिये करोड़ों-करोड़ों हिन्दुओं ने सवा-सवा रुपया अर्पित किया, करोड़ों घरों में जिसके चित्र लगे हैं उसी प्रारुप का श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर बनेगा।

०७. श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर के लिये जिन पत्थरों की नक्काशी की गई है और वे अयोध्या कार्यशाला में सुरक्षित रखे हैं, नित्य हजारों लोग जिनके दर्शन करते हैं, उन्हीं पत्थरों से श्रीरामजन्मभूमि मन्दिर का निर्माण होगा।

०८. सन्त समाज की घोषणा है कि अयोध्या की सांस्कृतिक सीमा में किसी मस्जिद का निर्माण नहीं होने देंगे और विदेशी बर्बर आक्रान्ता बाबर के नाम से सारे हिन्दुस्थान में कोई मस्जिद नहीं बनेगी।

०९. हम यह भी स्पष्ट घोषणा करते हैं कि हमारी भूमिका मात्र मन्दिर निर्माण करने तक ही सीमित है।

----------o---------

हरिद्वार में पूर्ण कुम्भ के अवसर पर (६ अप्रैल, २०१० मंगलवार) निर्वाणी अनी अखाड़ा परिसर (वैरागी कैम्प) में आयोजित सन्त महासम्मेलन श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण का संकल्प पूर्ण करने के लिए व्यापक लोक जागरण के उद्देश्य से निम्नलिखित धार्मिक कार्यक्रमों की घोषणा करता है –

१. गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती श्रावण शुक्ल सप्तमी वि० सं० २०६७ सोमवार तदनुसार १६ अगस्त, २०१० से प्रारम्भ करके तीन मास पर्यन्त अर्थात कार्तिक शुक्ल नवमी (अक्षय नवमी) तदनुसार १५ नवम्बर, २०१० तक ग्राम-ग्राम, मोहल्ले-मोहल्ले में मन्दिर केन्द्रित हनुमत् शक्ति जागरण के धार्मिक अनुष्ठान किए जायें, जिनमें सन्तों की प्रधान भूमिका रहे। और जिस ग्राम/मोहल्ला/कालोनी में मन्दिर नहीं हैं वहाँ ग्राम देवता का कोई स्थान हो, पीपल, वट आदि किसी पवित्र वृक्ष की छाया हो अथवा किसी सर्वमान्य स्थान पर यह धार्मिक अनुष्ठान करें। अनुष्ठान प्रारम्भ के पूर्व श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण के लिए संकल्प करें।

२. अनुष्ठान के अन्तर्गत हनुमान चालीसा के न्यूनतम ग्यारह पारायण सामूहिक करें। विभिन्न मत-पंथ-सम्प्रदायों के लोग अपनी आस्था-विश्वास के अनुसार किसी अन्य प्रकार का धार्मिक अनुष्ठान भी कर सकते हैं तो वह भी श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मन्दिर निर्माण के संकल्प के साथ हो तथा श्रीहनुमान जी को समर्पित हो।

३. सन्तों द्वारा पारित किए गए प्रस्ताव पर धार्मिक अनुष्ठान में उपस्थित सभी भक्तजन अपने हस्ताक्षर करें। आपका हस्ताक्षर ही श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण के लिए रामबाण सिद्ध होगा।

४. सामूहिक हनुमत् शक्ति जागरण कार्यक्रम के पश्चात प्रत्येक व्यक्ति अपने घर में श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण के संकल्प के साथ नित्य उपासना करे और हनुमान जी को समर्पित कर दे।

५. देवोत्थान एकादशी १७ नवम्बर, २०१० से गीता जयन्ती मोक्षदा एकादशी १७ दिसम्बर, २०१० तक प्रत्येक विकासखण्ड, ब्लाक, तालुका, प्रखण्ड में हनुमत् शक्ति जागरण महायज्ञ हो, जिसमें सब मंदिरों के प्रतिनिधि अपने-अपने मन्दिर क्षेत्र के हस्ताक्षरयुक्त प्रस्ताव लेकर आयें। देश में ऐसे ८,००० से अधिक केन्द्र हैं, सभी केन्द्रों पर यह महायज्ञ हों।

हमारा विश्वास है कि हनुमत् शक्ति जागरण से ही श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त होगा।

निवेदक

सन्त उच्चाधिकार समिति
विश्व हिन्दु परिषद
संकट मोचन आश्रम (श्रीहनुमान मन्दिर), सेक्टर-६, रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-११० ०२२

ॐ

केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल बैठक, ५ अप्रैल, २०१०
विश्व कल्याण साधनायतन, दक्ष रोड, कनखल, हरिद्वार में प्रस्तुत
अशोक सिंहल (अध्यक्ष-विश्व हिन्दू परिषद) की प्रस्तावना

पूज्य संत चरणों में सादर साष्टांग नमन् !

गंगा के पवित्र तट पर स्थित हरिद्वार में महाकुम्भ के अवसर पर मार्गदर्शक मण्डल में पधारे पूज्य सन्तों के श्रीचरणों में मैं विनम्र प्रणाम करता हूँ।

विश्व हिन्दू परिषद का आविर्भाव सन्तों की महान कृपा से हुआ और इसके संविधान में सन्तों के मार्गदर्शक मण्डल का प्रावधान किया गया। पिछले ४६ वर्षों में विश्व हिन्दू परिषद आप सन्त महात्माओं के मार्गदर्शन में कार्य करते-करते यहां तक पहुंची है। गत वर्षों में जहां संगठन का प्रभाव बढ़ा है वहीं अनेक क्षेत्रों में हमारे रचनात्मक कार्य भी विकसित हुये हैं। अपनी स्थापना के बाद से ही परिषद ने, जब और जहाँ हिन्दू समाज को चुनौती मिली है, उसके लिए संघर्ष एवं उसका निदान किया है।

चुनौतियां तो हमारे सामने अनेको हैं, किन्तु हमारे भविष्यदृष्टा महात्माओं का मानना है कि हमें एक समय में एक ही विषय उठाना चाहिए। इस कुम्भ में प्रधानता से गंगा, श्रीराम जन्मभूमि और गऊ का विषय उठा है। गंगा की अविरलता और निर्मलता को लेकर अनेक आन्दोलन चले हैं अभी कल ही कन्ट्रोलर ऑडीटर जनरल (नियंत्रक महालेखा परीक्षक) की रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। उन्होंने सरकार को स्पष्ट चेतावनी दी है कि जो परियोजनाएं चल रही हैं यदि वे चलती रहीं तो उनके चलते गंगा और भागीरथी सूख जायेंगी तथा उससे सटे हुये सभी गांव उजड़ जायेंगे। अतः इसकी गम्भीरता को देखते हुये गंगा पर चलने वाली परियोजनाएं रद्द की जाये। इसका एक मांगपत्र रूपी प्रस्ताव अखाड़ों की ओर से जारी किया गया वह आपके सामने है। इस बैठक में इस प्रस्ताव पर चर्चा कर इसमें हम जो भी परिवर्तन या संवर्धन करना चाहते हैं उसको अंतिम रूप देने की आवश्यकता है, जिससे कि कल सन्त महासम्मेलन में उसे प्रस्तुत किया जा सके।

दूसरा विषय श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण का है। श्रीराम जन्मभूमि के परिसर के चारों ओर की सटी हुई ७० एकड़ भूमि केन्द्र सरकार ने अधिगृहीत कर ली है। जबकि जन्मभूमि जहाँ श्री रामलला विराजमान है और उनकी पूजा हो रही है वह विवादित है तथा पिछले ६० वर्षों से मुकदमा चल रहा है। हाईकोर्ट की पूर्ण पीठ १२ बार बदल चुकी हैं। अब ऐसे संकेत मिल रहे हैं कि इस वर्ष के अन्त तक मुकदमे का निर्णय आ जायेगा। हमारे सन्तों ने सदैव कहा है कि जन्मभूमि हमारी आस्था का विषय है। उसे हमने कभी भी सम्पत्ति का विषय नहीं माना। जन्मभूमि मन्दिर का निर्माण न्यायालय के फैसले से नही होगा। न्यायालय का निर्णय देश में एक भयंकर संघर्ष को जन्म देगा। चूंकि इस्लामधर्मियों का विश्वास जेहादी आतंक से समस्याओं को हल करने का रहा है। अतः ऐसी स्थिति में पूरे हिन्दू समाज को तैयार रहने तथा इस विषम परिस्थिति का दृढ़ता से सामना करने की आवश्यकता है। इसके लिए सम्पूर्ण भारत में एक व्यापक लोक जागरण का कार्यक्रम प्रारम्भ करने की आवश्यकता है। चूंकि जन्मभूमि का विषय पिछले १८ वर्षों से सुप्त है

इसलिए नव-तरुण एवं युवा पीढ़ी इससे परिचित नहीं है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुये हमे आगामी जन-जागरण की योजना बनानी पड़ेगी।

जहाँ जन्मभूमि पर हमारे प्रस्ताव के विषय में जानकारी समस्त देशवासियों को पहुंचाने की आवश्यकता है वहीं इस वर्ष के अन्त तक लोक जागरण का एक सफल कार्यक्रम देने की भी आवश्यकता है। उसका भी प्रारूप हमारे सामने है जिसे अंतिम स्वरूप देना होगा। इस कार्यक्रम में पूरे चार महीने का समय १६ अगस्त से लेकर लगभग १७ दिसम्बर तक समर्पित करना होगा। उच्चाधिकार समिति की बैठक जब दिल्ली और हरिद्वार में हुई थी तब देश के हर मंदिर को हनुमत् शक्ति जागरण का केन्द्र बनाया जाये, यह सुनिश्चित हुआ था।

संघ परिवार पूरी शक्ति के साथ कम से कम एक महीने के लिए इस लोक-जागरण अभियान के लिए समर्पित रहेगा। इस अन्तिम एक महीने में भारत के ८ हजार केन्द्रों पर हनुमान् जी को समर्पित अनुष्ठान सम्पन्न हों तो हम इस माध्यम से यह समझाने में सफल हो सकते हैं कि श्रीराम जन्मभूमि का निर्माण संसद में कानून बनाकर किया जाए। लेकिन यह तभी संभव है जब जन्मभूमि का विषय सन्तों के नेतृत्व में उठे तथा इसे वोट का विषय न बनने दिया जाए और सभी दल दलगत राजनीति से ऊपर उठकर संसद में कानून बनवाने के लिए आगे आएं ।

तीसरा विषय गऊ का है। विजयादशमी, २००६ से मकर संक्रान्ति, २०१० तक कुल १०८ दिन की 'विश्व मंगल गो-ग्राम यात्रा' के दौरान बड़ा विराट जन-जागरण हुआ। ८.५० करोड़ हस्ताक्षर प्राप्तकर महामहिम राष्ट्रपति को मांगपत्र दिया गया। वह मांगपत्र आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस पर भी विचार करने की आवश्यकता है। संत चरणों को नमन् करते हुए मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ।

---------------o-------------